॥ जय बाबा स्वामी ॥

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

ॐ

|| Whole World is a Family ||

"श्री" "शिव" "कृपा" "नंद" "स्वामी" एक "नाम" नही है।
जिवन को जीने की "एक" "आध्यात्मीक" स्थीती है।

31-1-2019

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार - - - - -
हमारे प्राचीन काल से ही यह परम्परा रही है, की नवजात बच्चे का "नाम" कीसी ऋषी मुनी या संत महात्मा के द्वारा रखा जाता था इसके पिछे का भाव था की वह संत या महात्मा नाम के बहाने से उस बच्चे को आर्शीवाद के रुप मे प्रदान करेगा और ऐसा होता भी था नाम के अक्षर तो केवल माध्यम होते है, प्रत्येक "अक्षर" मे ही उर्जा छुपी होती है,

गुरुपोर्णिमा के "पावन पर्व" पर साधक श्री शिवकृपानंद स्वामी नमो नमः का गुरु मंत्र ग्रहण करते है। और अपनी ही आध्यात्मीक प्रगती करते है, यह मंत्र एक पवीत्र आत्माने एक "पवीत्र आत्मा" को प्रदान किया होता है, जब तक आत्मा कर्म बंन्धनो से मुक्त नही होती तब तक इस मंत्र का संपुर्ण प्रभाव अनुभव नही होता है, याने इस मंत्र से आध्यात्मीक प्रगती के लिये प्रथम "पवीत्र आत्मा"

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

बनना आवश्यक होता है, आत्मा को पवीत्र करने की दृष्टीसे ही गुरुशक्तीयो ने प्राथमीक मंत्र दिया की "मैं एक पवीत्र आत्मा हु मैं एक शुद्ध आत्मा हु," ताकी प्रथम साधक की आत्मा कर्म बंन्धनो से मुक्त हो सके और बाद मे ही "गुरु मंत्र" का प्रभाव उसके जिवन पर पड सके एक सामान्य से मंत्र मे कितना असामान्य अर्थ छुपा हुआ है, वह अब हम जानेगे।

मेरा सदैव प्रयास रहता है, मुझे ध्यान करना अच्छा लगता है, इस लीये आप करो ऐसा नही है, आप प्रथम ध्यान क्या है, और "ध्यान" मे कैसे जाया जाता है, ध्यान मे जाने मे क्या क्या बाधाऐ आती है, वह जान लो फीर आप ध्यान मे जाये ध्यान मे जाने के लीये प्रथम ध्यान का "बीज" प्राप्त करना होता है, ध्यान का बीज प्राप्त किये बीना ध्यान का "वृक्ष" कभी लग ही नही सकता है, प्रथम तो आप ध्यान करने की इच्छा करो की आपको ध्यान मे जाना है, तो फिर आप कीसी समाधीस्थ गुरु के "समाधी" के पास जाकर आप "आत्मसाक्षात्कार" मांगो तो फीर समाधीस्थ गुरु नो आत्मसाक्षात्कार नही दे सकता पर जो आपके जिवनकाल मे सद्गुरु का माध्यम है, वह आपको

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

मिलवा देगा।

श्री सदगुरु को मिलने के बाद आप अगर उसके सानीध्य मे इच्छा करे तो आप को आत्मसाक्षात्कार का एक अप्रतीम "अनुभव" हो जायेगाँ।

आत्मसाक्षात्कार मीलने के बाद फीर सारी सगली साधक को स्वंयम ही करना होती है। यह ठीक वैसा ही जैसे घर मे इलेकट्रीक का कनेकशन लेने के बाद घर के लाईट तो हमे ही जलाना होगे "सदगुरु" तो "इलेकट्रीशन" जैसा आयेगा परमात्मा के चैतन्य की अनुभुती करायेगा और चला जायेगाँ बाद मे साधक को अपनी ध्यान की "बैठक" तयार करना होती है, एक निश्चीत समय, निश्चीत ध्यान पर नियमीत रुप से 30 मीनीट बीना हिले डुले बैठने पर वह तैयार होती है, यह बैठक की तैयार करने मे ही "योगासन" सहायक है, क्योकी योगासन का अभ्यास अगर हम नियमीत करते है तो हमारे शरीर पर हमारा नियंत्रण हो जाता है, और हम 30 मीनीट बीना हिले डुले बैठ सकते है, यह ध्यान की प्रथम स्थीती होती है, इसमे प्राय शरीर ही विरोध करता है, रुमाल घुरना, खांसी आना- छिंक आना गैस पास होना इस प्रकार की विभीन्न बाधाऐ खडी कर शरीर एक प्रकार से ध्यान मे जाने का विरोध करता है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

इस प्रकार से आपका विरोध शरीर कितना भी करे आप "संकल्प" करे की 30 मीनिट मुझे बैठना ही है, तो आप देखेंगे कुछ दिन के बाद यह विरोध समाप्त हो जायेगा यह विरोध पर नियंत्रण करने के बाद आपके "मन" का विरोध प्रारंभ होगा। आपको खुब विचार आना प्रारंभ हो जायेंगे इतनी भुतकाल की जीवन की बातें याद आयेगी की जो भले ही आप भुल गये हो वास्तव मे यह हमारे चित्त की सफाई होने के कारण हमारे जिवन मे जो भी भुतकाल के विचारो का कचरा भरा पडा होगा है, वह सब निकलने लग जाता है।

इस समय प्राःय मनुष्य इन विचारो को रोकने का ही असफल प्रयास करता है, रोसा करने पर और अधीक-विचार आने लगते है, ऐसे समय अगर विचार रोकने का प्रयास करेंगे तो वह भी शरीर से ही होगा- "ध्यान" करना यानें कुछ भी नही करना "ध्यान" है शरीर से भी कुछ नही करना और मन से भी कुछ नही करना है, आप ऐसे समय साक्षी भाव रख-कर दुर से विचारो को देखे आपका चित्त जैसे ही विचारो पर जायेगा आप देखेंगे की विचार आना कम हो गये है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

ध्यान की इसके बाद की तीसरी स्थीती मनुष्य की बुद्धी विरोध करती है, वह आपको समझाती है, की ध्यान तुने कभी कीया नही, ध्यान, तुझसे कभी होगा नही ध्यान तो साधु संन्यासी करते है, तु तो एक "गृहस्थ" है. अगर फीर भी आप ध्यान मे से नही उठे तो फीर "बुद्धी" आपको कुछ तो भी आवश्यक कार्य याद दिलवायेगी और आपको ध्यान मे उठाने का प्रयास करेगी
मैने इन सभी समस्याओ मुक्ती पाने का मार्ग जो अपनाया है. वही आज मै आपको बता रहा हु,
मैने मेरे जिवन के 30 मीनीट मेरे गुरुदेव को "दान" कर दिये हम जो दान करते है. वह वापस लेना कभी नही चाहते है. आप भी आपके जिवन के 30 मिनीट गुरुशक्तीयो को दान कर दे. याने अब आप का दिन केवल 23।। घंन्टे का ही होगा-
ऐसा करने पर आप देखेगे 45 दिन नियमीत रुप से करने पर ध्यान लगना प्रांरभ हो जायेगा
मै ध्यान मार्ग मे बीना "अपेक्षा" से आया था-
और आज जिवन के उस "मुकाम" पर हु। की पाने

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

के लिये जिवन मे कुछ भी नही रह गया है, अपने जिवन मे पुर्ण तह "तृप्त" है, इस लीये आपको भी सलाह देता है, इस मार्ग मे "अपेक्षा" के साथ मत प्रवेश करे क्योकी ध्यान आत्मा और परमात्मा का मार्ग है, और "अपेक्षा" तो शरीर की होती है, आत्मा की कभी कोई "अपेक्षा" नही होती है।

"अपेक्षा" ध्यान साधना को अपवीग्र कर देती है, आप जैसे क्रिकेट का मैच देखने का "शौक" रखते है, ठीक वैसा ही ध्यान मे जाने का "शौक" निर्माण करे आप ध्यान करने वाले साधको के संगत मे रहेगे तो यह शौक अनायास ही निर्माण हो जायेगा ध्यान करने वालो के साथ रहोगे तो ध्यान की ही चर्चा होगी, अनुभुती की चर्चा होगी, अनुभव की चर्चा होगी।

ध्यान मे प्रगती के लिये "नियमीतता" और "सामुहिकता" अत्यंत आवश्यक है, क्योकी समाज मे इतना सारा वैचारिक प्रदुषण है, की हम ध्यान करने वाले साधको के बीना ध्यान मे प्रगती कर ही नही सकते है, सुबह शांत मे किया गया ध्यान हमारे चित्त को "सशक्त" करता है, तो शाम को सामुहीकता मे किया गया ध्यान चित्त पर "नियंत्रण" करता है

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

और आध्यात्मीक प्रगती के लिये यह दोनो ही आवश्यक है, कार लेना भी उतना आवश्यक है, और कार पर नियंत्रण करना भी उतना ही आवश्यक होगा। है।

अब हम गुरुपौर्णिमा को "गुरुमंत्र" ले तो लेते हैं, पर उसका अर्थ नही जानते अगर हम प्रथम गुरु के नाम का अर्थ समझेंगे और गुरुमंत्र के साथ हम उस नाम के साथ जुडने का भाव से प्रयास करते है, आपका भाव जितना शुद्ध व पवीत्र होगा। गुरुमंत्र का असर उतना ही अधीक होगा। भाव और बुद्धी यह दोनो मार्ग विपरीत दिशा मे है, भाव हमको "अंन्तरमुख" करना है, और अपने आप को जानना सीखाता है, वही बुद्धी हमारा चित्त बाहर की ओर लेकर जाती है, और दुसरे को जानना सीखाती है, इस लीये गुरुमंत्र को हम जितने भाव के साथ बोलेंगे हम उतने ही आत्मा के करीब महसुस करेंगे. "गुरुमंत्र" केवल शब्दो का समुह नही है, प्रत्येक शब्द के पिछे एक अर्थ छुपा हुआ है, इस लीये अब हम उस "अर्थ" को समझ कर "गुरुमंत्र" को बोलेंगे, उच्चारण जितना अर्थपुर्ण होगा। भाव भी उतना ही अधीक होगा।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||

|| Whole World is a Family ||

श्री

प्रतिदीन परमेश्वर का आभार व्यक्त करना जिसने आज का सुर्योदय देखने का सौभाग्य प्रदान कीया परमात्मा ने जो कुछ जिवन मे दिया है, उसके प्रति आभार व्यक्त करना।

आज का दिन मेरे लीये "शुभ" होगा। "मंगल" होगा। चैतन्यपुर्ण उत्साहवाला होगा। आज मुझे कुछ नयी अनुभुतीया होने वाली होगी। आज मुझे कुछ अच्छे अनुभव होने वाले होगे ऐसा पवीत्र व "शुभ" भाव रख कर दिन का प्रांरभ करना है। अनुभुतीया सदैव "वर्तमान" मे रहने वालो को ही होती है।

इसलीये आज मै पुरे दिन वर्तमान समय मे रहु ताकी चैतन्य सदैव अनुभव होता रहे आज ही मै जन्मा हुँ. यह मानना तो एक ओर "भुतकाल" समाप्त हो जाता है, दुसरी ओर ज्ञान ग्रहण करने के लीये हमारी 'गुणग्राहकता' सीखीकता बढ जाती है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

❀ शिव ❀

"शिव" सदा नकारात्मक विचारों की नाश करने वाली शक्ती होती है, जब हम शिव से जुडते है, तो हमारे नकारात्मक विचार नष्ट हो जाते है, आज मेरे जिवन मे अच्छा ही होगा। यह भाव निर्माण हो जाता है, मेरा बुरा कभी हो ही नही सकता मेरा बुरा कोई कर ही नही सकता है, यह "विश्वास" निर्माण हो जाता है।

"आत्मेश्वर" का अनुभव होना है, याने आत्मा ही ईश्वर है, यह भाव निर्माण होता है, परमेश्वर की खोज बाहर समाप्त हो कर भितर प्रारंभ हो जाती है, हम "अंन्तरमुखी" हो गये और परमात्मा को भीतर ही पा लीया यह अनुभव होता है तो भुतकाल नष्ट हो जाता है, हम पहले घटी हुयी जिवन की घटनाओ को जिन्होने हमारा बुरा किया उन व्यक्तीओ को अपने चित्त से निकाल कर फेंक देते है, "क्षमा" की आड से सब कचरा ही साफ हो जाता है तो हममे "सुरक्षीतता" का भाव आता है।

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

❀ कृपा ❀

परमेश्वर की कृपा ऐसी कोई "वस्तु" नहीं होती जो मांगने से मिल जाये वह तो पानी का झरना होती है, हम को ही उस झरने के निचे जाना पडता है, हम अगर प्रतिक्षण अनुभव करे गुरुशक्तीया हमारे साथ है, तो वास्तव मे आपको अनुभव होगा की वह साथ ही है।

"कृपा" तो नैसर्गिक होती है, आप जब तक उसे "ग्रहण" न करो वह आपके जिवन मे नहीं आ सकती है। "सदगुरु" का "कर्ता" भाव समाप्त हो गया इसी लीये परमात्मा का चैतन्य उसके माध्यम से हम तक पहुचा है, तो सदगुरु के "माध्यम" से ही हम परमात्मा के चैतन्य तक पहुच सकते है, सदगुरु तो "दरवाजा" है, उस "दरवाजे" से परमात्मा हम तक पहुचा है, हम उसी दरवाजे से परमात्मा तक पहुच सकते है, परमात्मा तक पहुचने का मार्ग ही "कृपा" है, "कृपा" "परमात्मा" का चैतन्य है। उसे ही अपना भाव वृद्धीगत कर के ही कृपा प्राप्त करना होती है, "कृपा" एक अनुभुती है, जीसका वर्णन नही किया जा सकता है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

❀ नंद ❀

नंद शब्द मे ही जिवन का "आंनद" छुपा हुआ है, सदैव आंनद मे रहना सदा प्रसन्न रहना जो भी जिवन मे मीला है, उसे आंनद के साथ "स्विकार" करना अपनी ही मस्ती मे सदैव मस्त रहना है, अपने जिवन मे सदैव वर्तमान मे रहना और संपुर्ण समाधान का अनुभव करना है।

हमे "आंनद" हमारे ही भितर से अनुभव होने लग जाता है, हम आंनद के लिये किसी दुसरे पर निर्भर नही रहते है, जिसने भी अनुभुती का आंनद लीया हो तो वह आंनद तो उसे अपने भितर से ही मीला है, "सदगुरु" भी निमीत्य है, उसे "अंन्तरमुखी" करने के लीये लेकीन जिवन मे जो आंनद मीला है, वह "सदगुरु" के कारण नही आप स्वंयम "अन्तरमुखी" हो जाये इस लीये हो यह बात अलग है, की केवल "सदगुरु" के सानीध्य मे ही अंन्तरमुखी हम हो सकते है, आत्मा का आंनद केवल एक आत्मा बन कर ही लिया जा सकता है, आत्मा बनीये।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org
|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

स्वामी

"स्वामी" तो आत्मा की "कर्ममुक्त" अवस्था है, जिसमे न तो कोई अच्छा कर्म जुडा रहता है, और न कोई बुरा कर्म जुडा रहता है, जिवन मे कोई कर्म ही बाकी नही रहा तो दुसरा जन्म लेने का कोई कारण ही नही रह जाता है, और एक "मुक्त अवस्था" प्राप्त हो जाती है,
परमात्मा की खोज ही समाप्त हो जाती है, और आपके भितर ही परमात्मा है, यह अनुभव होने लग जाता है, आप ही आप के "स्वामी" हो जाते हो आप ही आप के "गुरु" हो जाते हो आपको आपके आत्मा से आध्यात्मीक मार्गदर्शन मीलने लग जाता है,
प्रत्येक साधक अपना स्वंयम का "गुरु" बने यही समर्पण ध्यान का प्रमुख उद्देश है, आप कभी सद्‌गुरु पर निर्भर न हो आप ही आप के "स्वामी" बने यही इस "गुरुमंत्र" का उद्देश है, लेकीन इस मंत्र को संपुर्ण भाव से ग्रहणकर अंन्तरमुखी अवस्था आप को प्राप्त करना चाहीये तभी यह संभव होगा

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

हम नियमीत रुप से ध्यान करते है, और केवल-
इस गुरुमंत्र को बोलते नही "नमो नम:" भी कहते-
है, याने इस मंत्र को नमस्कार कर झुकते है,
तो "गुरुकृपा" हम पर बरसने लगती है, और
धिरे2 हमारी आत्मा स्वंयम सहाकत होकर अपने-
आप को बंन्धनो से "मुकत" करने लगती है, सबसे
अंन्त मे "लगाव" का बंन्धन छुटता है, वह फीर
"परिवार" का हो सकता है, "सदगुरु" के शरीर का
हो सकता है, "परमात्मा" का हो सकता है, बाद
मे "परमात्मा" हमारे भितर ही है, तो जिवन
ही "परमात्ममय" अनुभव होने लगता है, परमात्मा
की खोज भी समाप्त हो जाती है, जो भितर ही
स्वैव अनुभव हो रहा है, उसे बाहर कया खोजना
सारी जिवन की खोज ही समाप्त हो जाती है, हमारी
अपनी ही पहचान हमे होती है, जिवन मे सब कुछ
भोग लीया यह "समाधान" प्राप्त हो जाता है, जिवन मे
सब कुछ प्राप्त हो गया यह "तृप्ती" हो जाती है,
करना का भाव पुर्ण रह समाप्त हो जाता है, जिवन
मे एक "साक्षी" भाव अनुभव होता है,

जिवन मे हम आत्मभाव की स्थिती का अनुभव करने लगते है, शरीरभाव पुर्णतह समाप्त हो जाता है, जिवन मे आत्मसुख का अनुभव होता है, हम सुखी रहने के लीये कीसी और पर निर्भर नही होते है।

"श्रीशिवकृपानंद स्वामी" यह नाम ही "विश्व मे युनीक" है। इस नाम का दुसरा कोई "शरीर" नही है, यह नाम साक्षात विश्वचेतना मे बनाया है, अपने सभी गुणो को एक सामान्य से सामान्य मनुष्य भी ग्रहण कर सके इस उद्देश से यह नाम का निर्माण किया है, यह नाम नही है, "साक्षात चैतन्य" है, अगर आप संपुर्ण शुद्ध पवीत्र भाव के साथ इसका उच्चारण करते है, तो "आत्मा" के सारे गुण आपमें आने लगते है, और शरीरभाव पुर्णतह समाप्त हो जाता है, इसकी दुसरी विशेषता है, यह आज के वातावरण आज की परिस्थीती मे सामान्य से सामान्य कैसे आध्यात्मिक प्रगती कर सके यह सोच कर बनाया है। आप इस नाम को बुद्धी से न समझे आप इस नाम को भाव से लेकर खुद ही अनुभव कर ले।

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

सामान्य कांच हो या मिरर (आयना) दोनो ही कांच ही होना है, पर मिरर वह कांच होना है, जिसके पिछे "पारे" की एक परत होती है, उस विशेषता के कारण ही हम "मिरर" मे अपना चेहरा देख सकते है।
ठीक इसी प्रकार से प्रत्येक शरीर मे "परमात्मा" होना ही है, पर सदगुरु का शरीर वह शरीर है, जिसके पिछे "साक्षात परमात्मा" होना है, (आत्माओ की सामुहीक शक्ती का नाम परमात्मा है) वह सदगुरु के शरीर के पीछे लगा होने के कारण ही हम जिस प्रकार से मिरर मे अपना चेहरा देख सकते है, ठीक वैसे ही सदगुरु के सानीध्य मे आप अपने आप को जान सकते है।
आप अंन्तरमुखी हो सकते है,
हम अंन्तरमुखी केवल सदगुरु के सानीध्य मे ही हो सकते है, बाकी सभी जगह हमारा चित्त बाहर की ओर जाता है, हम सारी दुनीया को जान लेते है, पर अपने आप को जान नही पाते है, इसलीये सदगुरु का "दर्शन" जिवन मे बडा "दुर्लभ" होता है, और उस दर्शन का सबसे अच्छा उपयोग हमे अपने आप को अंन्तरमुख होने के लीये करना चाहीये

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

यह सब विस्तृत रूप से बताने का उद्देश्य एक ही था आप केवल नाम से न जुडे नाम का अर्थ समझे और संपुर्ण भाव के साथ "अपेक्षा" रहीत हो कर आप इससे जुडे तो आप उस नाम की संपुर्ण उर्जा को ग्रहण कर पायेगे।

आप जिवन मे वह कर्ममुक्त अवस्था को प्राप्त करेगे जिस मुक्त अवस्था को मोक्ष कहते है, इस गुरुमंत्र से जुडने के पुर्व एक पवीत्र और शुद्ध आत्मा बने आप सभी को वह "मुक्त अवस्था" प्राप्त अपने इसी जिवन मे मीले इसी एकमात्र उद्देश से यह मंत्र बनाया गया है, आप स्वंयम अनुभव लेकर भी देख सकते है, सभी जिवन की समस्या हमारे शरीर से ही संम्बन्धीत होती शरीर ही नाशवान है, तो समस्या शाश्वत कैसे हो सकती है, जब शरीर भाव ही कम होने लगता है, तो जिवन की सभी समस्याये कम होने लगती है, "वसुधैव कुटुंबकम" की कल्पना जो हमारे पुर्वजो ने की थी वह किसी एक देवता, या किसी एक उपासना पध्दती से संभव नही है, केवल और केवल "समर्पण ध्यान का संस्कार" ही है, जिससे यह कल्पना संभव हो सकती है।

Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

पिछले २२ साल से इस "समर्पण ध्यान संस्कार" का प्रचार प्रसार सारे विश्व मे हो रहा है, आज विश्वभर के अनेक देश इस पवित्र संस्कार के माध्यम से जुडे है, जो अलग२ जाती, धर्म, भाषा, देश के है,

सभी ने समर्पण ध्यान संस्कार को ग्रहण कर यह अनुभव किया है, की हम सर्वप्रथम एक आत्मा है। आत्मा, आत्मा होती है, वह किसी भाषा या किसी जाती धर्म, देश लींग की सीमा मे बन्धी नही होती है। यह आत्मा की अनुभुती ही सारे बन्धन तोड देती है।

आप इस "गुरुसंग" के माध्यम से वह "मुक्त अवस्था" को प्राप्त इसी जिवन मे करे यही प्रभु से प्रार्थना है। आप सभी को खुब खुब आशीर्वाद

आपका अपना
बाबास्वामी
31-1-2019